विभूति आनन्द

मूल नाम – विभूति चन्द्र झा

जन्म – 4 अक्टूबर, 1955 ई0

जन्म स्थान – शिवनगर

वृत्ति – 1. जिला स्कूल, मुंगेरमे मैथिली विषयक +2 व्याख्याता

2. रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, जिला-मधुबनीमे मैथिली विभागाध्यक्ष।

3. सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे कार्यरत।

कृति – प्रवेश (1979), खापड़ि महक धान (1989), काठ (2002)-कथा-संग्रह। डेग (1977), उपक्रम (1984) पुनर्नवा होइत ओ छौड़ी (1992), नेहाइपर स्वप्न (1999)-कविता-संग्रह। झूमि रहल पाथर मन (1988), उठा रहल घोघ तिमिर (1981)-गीत-गजल संग्रह। गाम सुनगैत (1980), पराजित-अपराजित (1982)-उपन्यास। समय संकेत (1988), त्तित्तिरदाइ हाली-हाली बरिसू (2005)-नाटक। श्री ललित आ हुनक कथा-यात्रा (1982), स्मरणक संग (2004), ललित (2004)-समीक्षा। मैथिल शहीद बैकुण्ठ शुक्ल, जीव विज्ञान-अनुवाद। एकर अतिरिक्त अनेको पत्र-पत्रिका एवं पुस्तकक यशस्वी सम्पादक रहल छथि।

पुरस्कार – 'काठ' कथा-संग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2006)।

□□□

आउ, हम बेटी-विमर्श करी

एहि पितृसत्तात्मक समाजमे बेटी, ओ चाहे बहीन रहलि हो वा पुतोहु, पत्नी रहलि हो वा आनहि कोनो सम्बंधक डोरसँ बन्हाएल रहलि हो, दोयम दर्जाक स्तर पर जीबैत रहलि अछि। ओकरा अपन होएबाक ने तऽ बोध भेलै, आ ने तेहन कोनो परिवेश भेटलै जे ओ अपन स्वतंत्र अस्तित्वकेँ निखारितए। समाजमे ओ सभ दिन दलित रूपमे जीबैत रहलि। ककरो बेटी भऽ कऽ तऽ ककरो पत्नी भऽ कऽ अपन भऽ कऽ जीवाक जेना ओकरा अधिकारे नहि देलकै ई समाज। जहिया-जहिया बेटीक जन्म भेलै, परिवारक चेहरा मलिन भेलै। खुशी हेरा गेलै। बेटी जखन पैघ भेलि तऽ बेटा जकाँ ओकरो एकटा नाम भेटलै। विवाहक बाद मुदा ओहि बेटीक नाम ओकरा नहिरेमे रहि गेलै। सासुरमे पुनः एकटा दोसर नाम भेटलै। मानि लियऽ जेना पुनर्जन्म भेल हो। जखन ओ बेटी आब पुतोहु बनि चुकल छलि, पहिल बेर माए बनलि तऽ फेर ओकर नाम बदलि गेलै-फल्लाँ आकि फल्लींक माए!.....कहबाक अर्थ ई जे बेटी जाति एहि समाजमे एही स्थितिमे जीबैत रहलि अछि, स्पष्ट भऽ कऽ ओकर नाम धरि स्थिर नहि रहि सकलै।

ई थिक हमर समाज, आ ताहि समाजमे बेटी, अर्थात् नारीक स्थिति। एकरा सभ दिनसँ एक समस्या बुझल जाइत रहलै, जाहिमे प्रमुख रहलै वैवाहिक समस्या। अर्थात् बेटी माने समस्या, आ समस्या माने विवाह। आर दोसर समस्या भेबे नहि कएलै। भेबो कएलै तऽ सोचले नहि गेलै। बेटी एकमात्र संतानोत्पत्तिक कारक रहलि, आ तेँ विवाह। मैथिली साहित्यमे तेँ विवाह एक प्रमुख विषय रहल अछि। समस्याक ई एक तेहन जाल रहल, जकरा सँ मुक्त होएबाक कोनो ओर-छोर नहि भेटलै। ई समस्या अदौ कालसँ मात्र गाओल जाइत रहल। सोहरसँ लऽ कऽ समदाउन धरि।

विद्यापति कालमे सेहो ई समस्या छल। अनमेल विवाहक समस्या। विद्यापति तेँ राधा-कृष्ण, माने युवा-युवतीक रंग-रभसमे भेर अथवा पूजा-पाठमे निमग्न, जखन समाज दिस तकलनि तऽ व्यथित भऽ उठलाह। ओ पीड़िता बेटीक दर्द आ दाह केँ ओकरे स्वरमे कहलनि।

पिया मोर बालक, हम तरुनी गे, कोन तप चुकलहुँ, भेलहु जननी गे। ओ बेटी जखन अपन पति केँ कोरामे लऽ कऽ हाट-बाजार करऽ जाए तऽ लोक सभ ओकरा सँ ओकर संबंधक मादे पुछाहेरी करै छै। अन्ततः ओकरा कहऽ पड़ै जे ई नहि तऽ हमर देओर लगै छथि, नहि तऽ छोट भाए। ई तऽ हमर पूर्वक लिखल छल, ई हमर पतिदेव छथि।

मुदा विद्यापति एहि समस्याकेँ मात्र समस्या जकाँ नहि रखलनि। ओ तत्कालीन सामाजिक संरचनाक अनुकूल प्रत्यक्ष विरोध नहि कऽ कऽ, व्यंग्य-शैलीमे ओही पीड़िताक कण्ठसँ कहलनि-

बाट रे बटोहिया कि तुहू मोर भाइ

हमरो समाद नैहर नेने जाइ

कहिहुन बाबा के किनता धेनु गाइ

दुधबा पिलाइ के पोसता जमाइ

तत्कालीन समाजक एहि वर्गक एक सीमा रहल होएतै, तेँ अपन दु:स्थितिक विरोध एहि सँ आगू बढ़िकऽ नहि कऽ सकै छल। मुदा उक्त पाँतीमे जे पीड़ा छै, तकरा आइयो अकानल जा सकैए। ओहि बेटीक तामस अपन बाबा अर्थात् पितापर छलै, माए पर नहि। माए तऽ पीड़िता रहलै सभ दिन। गुम-सुम। घूर- धुआँ करैत। ओना एकरा विरोधक विद्यापति शैली सेहो कहल जा सकैए। तेँ नारी मनोविज्ञानक प्रखर अध्येता महाकवि विद्यापति मात्र रंग-रभस आ पूजे-पाठमे लागल नहि छलाह। ओ समाज अध्ययन सेहो करै छलाह, आ कोनो ऊँच-नीचक विरोध करऽ सँ नहि चूकै छलाह।

मुदा एहि वर्गक ई समस्या, मिथिला-समाजक कपार पर चढ़ल, नचिते रहल। अपितु एना कही जे आरो भयावह होइत गेल। तकर कारणमे उएह पितृसत्तात्मक समाज, ओकर पुरुषवादी मानसिकता, मुखर रहलै। मातृसत्ता सेहो ताहि स्थितिमे स्वयं केँ सुरक्षित बुझैत, भोग्या बनलि, हँसैत-कनैत-गबैत जीबैत रहलि, अपन स्वभावक परम्पराकेँ आगूक पीढ़ीकेँ सोंपैत रहलि।

एही क्लीव परम्पराक प्रतीक आधुनिक कालमे भेली 'बुच्चीदाइ'। हरिमोहन झाक सर्वप्रशंशित चरित्र। अर्थात् लगभग पाँच-साढ़े पाँच सए वर्ष बाद धरि सेहो बेटी अपना केँ 'बुच्चीदाइ चुप्पे' धरि सीमित रखने छलीह।

हरिमोहन झा नारी-जागरण विषयक बहुत रास वस्तु अपन लेखनीक माध्यमे साहित्यमे अनलनि, मुदा समाजमे हुनका अधिसंख्य प्रणम्य देवता लोकनि सएह भेटलथिन। खट्टरकका भेटलथिन, तऽ विशुद्ध तार्किक रूपमे। तेँ हुनका साहित्यमे बेटी- विकासकेँ अपेक्षित स्वर नहि भेटि सकलै। 'तितिरदाइ' अपन भविष्यपर कनैत रहली। ग्रैजुएट पुतोहुकेँ सेहो सामाजिक लांछना टा भेटलनि। तथापि हरिमोहन बाबू करोट फेरैत समयकेँ अकानैत विमला देवी सन चरित्रकेँ 'ग्रामसेविका'क माध्यमे स्थापित कएलनि। मुदा बुच्चीदाइ हुनका संग नहि छोड़लथिन।

हरिमोहन झाक समकालमे अएलाह बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। अनमेल ओ बाल विवाह हिनको मथने छलनि। हिनकर बेटीक माएकेँ कण्ठ फुटलनि। ओ ओकर बापकेँ सोझे-सोझ पुछलथिन-

ई की कएल, उठाकऽ लऽ आनल

कमलक कोढ़ी ले ढेंग कोकनल

.....

जनमितहि मारि दितिअइ नोन चटाकऽ

कुहरए नहि पड़ितए घेट कटाकऽ

तामस तकर बाद माएक बेटी केँ सेहो उसकौलकै। ओहो तर्जनी देखैलक-

जो रे राक्षस, जो रे पुरुषक जाति!

तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहलि छी

मुदा तुरंते ओ तामस, पुआरक आगि जकाँ मिझा गेलै, ओ हारि गेलि-

ककरा की कहबै, सुनत के आइ

फाटऽ हे धरती, समा हम जाइ

माने, उएह सीताक नियति! विरोध नहि कऽ कऽ अपन अस्तित्वकेँ माटिमे मिला लेलनि।

मुदा ई से अनमेल विवाहक बेटीक परिणति छल। जातिक खरीद-बिक्रीक झमेला छल। मुदा ओही समयक बाल विवाहक विधवा बेटीक स्थिति किछु फराक छल। ओ अपेक्षाकृत बेसी चेतन, बेसी समर्थ भऽ गेल छलि। ओ धरती फटबाक कामना नहि कऽ जीबैत रहि समाजक एहि क्रूर परम्परा पर चोट कएलक-

अगराही लगौ, बरू बज्र खसौ

एहेन जाति पर बरू धसना धसौ

भूकम्प हौक, बरु फटौक धरती

माँ मिथिला रहिकेय की करती

ई रहए यात्रीक यात्रीपन! बेटीक चेतनाकें प्रखरताक संग निखार देबाक अभिनव चेष्टा। वस्तुतः मैथिल-समाजमे ओकर नाड़ीकें वैद्य बनिकऽ गहनताक संग टोबाक, गर्मीक नपबाक जमीनी प्रयास यात्रीये कएलनि। 'नवतुरिया' तकर उत्तम उदाहरण अछि। यात्री जाहि अनमेल विवाहक 'बूढ़बर' कवितामे हारल विरोध केँ दरसौलनि, एहि 'नवतुरिया' उपन्यासमे आबि ओकर सफल परिणतिकें साकार कएलनि। एहिमे नायिकाक विवाह एक बूढ़सँ नहि भऽ कऽ समवयसी युवक सँ भेल छल।

वस्तुतः बेटीक सोचमे बहुत तेजीसँ विकास भऽ रहल छलै। ओ 'दबल हाहाकर' नहि भऽ कऽ अपन जन्मसिद्ध अधिकारकें बुझऽ लागल छलि, आ ताहि दिशामे दखल देब आरंभ सेहो कऽ देने छलि। नहूँ-नहूँ नवीन शिक्षाक हिसाबे पढ़ऽ-लिखऽ लागल छलि, स्कूल-कॉलेजक प्रति उत्सुकता बढ़ि रहल छलै।

तकर कारण सेहो छलै।समाजक पुरुष-पात स्थायी रोजी-रोटीक खोजमे, दरिद्रताक मारल, अपन गामघरसँ बहराएब शुरू कऽ देने छल। अयाची मिश्रक सोच बहुत कष्ट देबऽ लागल छलै। अपना बाड़ीक उपजा खाकऽ आब ओ अधिक दिन नहि जीबि सकै छल। ओकर आवश्यकता, ओकर सोच अंग्रेजी शिक्षाक प्रभाव सँ विस्तार पाबि रहल छलै। से, जखन ओ बहराए लागल, बेटीक प्रति दृष्टिकोणमे अंतर होबऽ लगलै। ओ दिन-दुनियाँ देखलक। पश्चात् जखन सपरिवार शहरजीबी होएब शुरू कएलक तऽ परिवेशगत प्रभाव, वैचारिक परिवर्तन अनबामे सहयोग कएलकै। बेटा संग बेटीकेँ सेहो स्कूल पठबऽ लागल। बेटी पढ़ऽ लागलि। बेटीक पढ़ब आ कर्मक्षेत्र दिस बढ़बाक बसात क्रमशः

गामघर दिस सेहो सिहकले गेलै।...

ई परिवर्त्तन हठात् नहि भेलै। जखन देश आजाद भेल, लोक कल्याणकारी सोच, व्यवस्थाक नव क्रेन्द्रबिन्दु बनल, तऽ शिक्षाक प्रति आम रुझान बढ़लै। आ से दुनू स्तर पर। सरकार आ जनता दुनू एहि दिशामे नव उत्साह आ नव उमंगक संग गतिशील भेल।

एहि सभ तरहक परिवर्त्तनक हमर समकालीन मैथिली साहित्य, साक्षी रहल अछि। साक्षी रहि एहि परिवर्तित सोचकेँ आजुक सोच कहि स्वागत कएलक अछि।

कारण, आइ बेटीक प्रति पुरान दृष्टिकोण बदलि रहल छै, बदलि गेल छै। आइ बेटी, बेटाक अपेक्षा बेसी नीक रिजल्ट अनैए। बेटी चहकैए। बेटी ईर्ष्या बनैए। बेटी दया नहि, स्वाभिमान बनि गेल अछि। बेटी धुरखुरक भीतरक नोर नहि, भोर जकाँ धमकऽ लागल अछि। ओ आइ एमबीबीएस डाक्टर सँ लऽ कऽ आइआइटी इंजीनियर बनऽ लागलि अछि। प्रोफेसर , विभागाध्यक्ष सँ लऽ कऽ कुलपति बनि रहल अछि बेटी। बेटी आइ ओहन सभ किछु करऽ लागल अछि, जे काल्हि धरि बेटा लेल निहुँछल रहैत छलै। आइ मिथिलाक बेटी न्यायाधीशक कुर्सी पर बैसैत, सांसद-विधायक भऽ कऽ मंत्री बनैत तथा आइएएस-आइपीएस भऽ देशक व्यवस्थाकेँ व्यवस्थित करऽ मे लागलि अछि। हमर बेटी तऽ पर्वतारोही भऽ हिमालयक शिखर छूबि आयलि अछि।

ई जे परिवर्त्तन भऽ रहल अछि, भेल अछि ओ बेटीकेँ अपन जीवन जीवाक दृष्टिकोणमे सेहो परिवर्त्तन आनि देलक अछि। ओ अपन केरियरकेँ प्रमुखता दैत विवाह-संस्थाकेँ सेहो गौण बुझऽ लागलि। एक टटका प्रकाशित कथामे ओ अपन पिताकेँ स्पष्टत: कहैत अछि 'पापा हमर चिन्ता नइ करू। हमरा लेल विवाहसँ अधिक महत्वपूर्ण हमर केरियर अछि। हमर केरियर संग मजाक बन्द करू। ई हक हम अहाँकेँ नइ दै छी...।'

विवाह संस्था पर प्रहार कोनो नव नहि अछि। पछिले सदीमे ई हवा सिहकि उठल छल। वैचारिकता करोट फेरि रहल छल। 'पृथ्वीपुत्र'क सहनायिका बिजली, अपन मोनक सोझ-साझ आ स्वाभाविक कथामे मुक्तप्रेमक महादेवी बनैत, संगहि अवचेतनक स्तर पर सही, विवाह संस्थापर प्रहार करैत कहैए-'जीह कूचि बिजली पाछाँ घुसुकि गेलि जेबर पहिरबाक नाम पर। फेर गंभीर भेलि किछु काल धरि विचारइत रहलि। फेर शान्त स्वरें बाजलि-हम तोरा संगे ने रहबऽ, ने बियाहे करबऽ। हम नियम कएने छी। बिअहुआ के तेयागि आब ई तोहर सुइत-पाइत हमरा छजत? हम एहिना तोरा लग अबइत रहबह। चोराकऽ-नुकाकऽ। साँझखन, रातिमे, बेरिआमे।'

हम अपन कथनकेँ आर अधिक उदाहरण दऽ कऽ सिद्ध करबाक अपेक्षा मूल गप ई कहऽ चाहै छी जे आइ बेटी वैचारिक स्तर पर बहुत दृढ़ भऽ चुकल अछि। जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे ओकर महती भूमिकाकेँ अनदेखी नहि कएल जा सकैए। ओकरा रूढ़ रूपमे भोग्या बनाकऽ रखबाक सपना देखब अपराध छी, अपन सोचकेँ समय सँ पाछू चलबा लेल प्रेरित करब थिक। काल्हि धरि जे बेटी एक सफल गृहिणी रूपमे रूढ़ छलि, आइ ओकर संग-संग सफल कामकाजी महिला-रूपमे प्रशंसित अछि। ओ घर-बाहर दुनू केँ बहुत नीक ढंगे सम्हारैत आगू बढ़ि रहल अछि। तकरे

परिणाम थिक जे आइ समाजमे बुच्चीदाइ, सघन अभियान चलौलाक उपरान्तो नहि भेटतीह। हुनक परम्परा विलुप्त अछि। बुच्चीदाइक संतति नव संस्कारसँ युक्त हीरादाइक रूपमे ख्यात भऽ गेलि छथि। ओ विकासक अनेक सीढ़ीकेँ पार करैत व्यापार-प्रबंधनमे लागि गेलीह अछि। एतऽ स्मरणीय जे आजुक सर्वाधिक प्रिय आ जरूरी विषय सेहो सएह अछि-विजनेस मैनेजमेंट! अस्तु।

बेटीक मादे अपन समाजमे एक बहुत पुरान लोकोक्ति सुनल जाइ छल-बेटी ताड़ जकाँ बढ़ि गेलए। ई ताड़ जकाँ बढ़ब पिताक लेल चिन्ताक विषय होइत छल। चिन्ता एहि लेल जे आब ओकर विवाह करबऽ पड़त। आइ ओहि लोकोक्तिक अर्थ बदलि गेल अछि। बेटी ठीके ताड़ जकाँ बढ़ि रहलए! अर्थात् ओकरामे अपन होएबाक बोध जन्म तऽ लेलकैए। ओ अहुसँ तेजीसँ आत्मनिर्भरता दिस डेग उसाहि रहलए। तेँ जे समाज काल्हि धरि बेटीकेँ बलाय मानि ओकरा संग अपनो हकन्न कनबा लेल अभिशप्त छल, आइ से बेटी 'आय'क एक प्रमुख कारण बनि, घर-परिवारसँ लऽ कऽ देशक विकास धरिमे अपन एक महती भूमिकाकेँ रेखांकित कऽ रहलि अछि। एहना स्थितिमे 'मनुस्मृति' मे आएल ओ गार्हस्थ्य-सम्बंधी प्रगतिशील श्लोक वस्तुत: एहि समकाल लेल संदर्भित भऽ उठैत अछि, अर्थात् 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'।

शब्दार्थ

पितृसत्तात्मक समाज-पुरुष प्रधान समाज

डोर-रस्सी

दोयम दर्जा-दोसर (निम्न) दर्जा

बोध-ज्ञान, जनतब, जानकारी

परिवेश-वातवरण, चारूकातक आवो हवा

अस्तित्व-सत्ता

पुतोहु-पुत्रक पत्नी

संतानोत्पतिक कारक-(सन्तान-पुत्र पुत्री+उत्पत्ति=जन्म कारक=कारण/साधन) सन्तान उत्पन्न करबाक साधन।

सोहर-जन्मकालमे गाओल जाइवला गीत

समदाउन-बेटीक बिदाइ कालमे गाओल जाइवला गीत

अनमेल-बेमेल

व्यथित-दुखित

तरुनी-नवयुवती, नवयौवना

जननी-माय

संरचना–बनाबटि

जमाइ–बेटीक पति

दु:स्थिति–खराब स्थिति

अकानल–अनुमान लगायब

तामस–क्रोध

भोग्या–भोग करबा जोग वस्तु

सोंपैत–समर्पित करैत

क्लीव–नपुंसक

प्रतीक–चिह्न

अधिसंख्य–बेसी संख्या

प्रणम्य देवता–यथा स्थिति वादी

लांछना–कलंक/दोष

करोट फेरैत–करबट बदलैत

विधवा–जकर पति मरि गेल हो, ओ स्त्री

सपरिवार–परिवारक संग

साक्षी–गवाही

पर्वतारोही–पहाड़ पर चढ़निहार

विलुप्त–समाप्त

लोकोक्ति–लोकक कहब

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर एक शब्दमे दिअ–**

(i) दोयम दर्जाक स्तर पर के जीबैत रहलि अछि?

(ii) ककर जन्मसँ परिवारक चेहरा मलिन भेलैए?

(iii) बेटी एकमात्र ककर कारक रहलि अछि?

(iv) जखन समाज दिस तकलनि तऽ के व्यथित भऽ उठलाह?

(v) हरिमोहन झाकेँ समाजमे अधिसंख्य कोन लोकनि भेटलथिन?

2. खाली स्थानकेँ कोष्ठकक उचित शब्दसँ भरू-

(i) आधुनिक कालमे 'बुच्चीदाइ.....परम्पराक प्रतीक भेली।

(ii) विमला देवी सन चरित्रकेँ.....माध्यमे स्थापित कयलनि।

(iii) हरिमोहन झाक समकालमे अयलाह.....।

(iv) समाजक कुटिलताकेँ देखि अपन अस्तित्वकेँ माटिमे मिलायब.....नियति अछि।

(v) यात्रीजीक एकटा उपन्यासक नाम अछि.....।

(ग्रामसेविकाक, क्लीव, सीताक, नवतुरिया, यात्री)

3. स्तम्भ 'क' क मिलान स्तम्भ 'ख' उचित शब्दसँ करू

(क)	हरिमोहन झा	(i)	बिजली
(ख)	यात्री	(ii)	बुच्चीदाइ
(ग)	सोहर	(iii)	मातृसत्तात्मक
(घ)	पितृसत्तात्मक	(iv)	समदाउन
(ङ)	पृथ्वीपुत्र	(v)	बूढ़वर

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) एहि समाजमे स्त्री कोन-कोन रूपमे विद्यमान अछि?

(ii) विद्यापति समाज दिस ताकि व्यथित किएक भऽ गेलाह?

(iii) विद्यापति बेमेल विवाहक विरोध कोन शैलीमे कयलनि?

(iv) आधुनिक कालमे बुच्चीदाइ कोन परम्पराक प्रतीक भेली?

(v) आइ बेटीक प्रति पुरान दृष्टिकोण बदलि रहल छै कोना?

5. सही कथनक समक्ष (✔) चिह्न आ गलक कथनक समक्ष (X) चिह्न लगाउ-

(i) आइ बेटी वैचारिक स्तर पर बहुत दृढ़ भऽ चुकल अछि।

(ii) यात्री स्त्री समाजक गहनताकेँ बुझबाक जमीनी प्रयास कयलनि।

(iii) विद्यापति मात्र युवा युवतीक रंग रभसमे भेर छलाह।

(iv) स्त्री जातिक नाम स्थिर रहैत अछि।

(v) खट्टरकका विशुद्ध तार्किक छलाह।

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) बेटीक जन्म भेला पर परिवारक चेहरा मलिन किएक भऽ जाइत छलै?

(ii) समाजमे स्त्री जाति दु:स्थिति विरोध कोना कयलनि अछि?

(iii) हरिमोहन झाक साहित्यमे नारी जागरणक चित्रणक उल्लेख करू।

(iv) यात्री जी अनमेल विवाहक विरोध कोना कयलनि अछि?

(v) आइ बेटीक प्रति सोचमे समाजक दृष्टिकोणमे तेजीसँ परिवर्तन भऽ रहल अछि। कोना?

(vi) आइ कोनो एहन कार्यक्षेत्र नहि अछि जाहिमे नारीक उपस्थिति नहि अछि। एकरा विस्तारसँ वर्णन करू।

(vii) आजुक सर्वाधिक प्रिय विषय की थीक आ किएक?

योग्यता विस्तार

1. विद्यापतिक नारी जारगणसँ सम्बन्धित रचनाक संकलन शिक्षकक सहयोगसँ करू।
2. यात्री जीक 'बूढ़वर' कविता आ 'नवतुरिया' उपन्यासकेँ विद्यालय पुस्तकालयसँ उपलब्ध कऽ अध्ययन करू।
3. हरिमोहन झाक 'बुच्चीदाइ', खट्टरकका, तितिरबाइ आ ग्रेजुएट पुतोहुक सम्बन्धमे अपना अध्यापकसँ विस्तृत जानकारी प्राप्त करू।
4. समकालीन पत्र पत्रिकासँ नारी जागरणक कोनो दूटा कथा अथवा कविताक संकलन करू।